प्रकाशन तिथि : 01 सितम्बर, 2020
प्रेषण तिथि : 04 सितम्बर, 2020

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 24 | अंक 12 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रति: रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

पारिवारिक स्नेहमिलन, बाड़मेर

'संघ हमें जीवन का अमृत पिलाना चाहता है'

अपने जीवन के उद्देश्य के प्रति लगन ही फकीरी कहलाती है और इस फकीरी को आप कभी भुलाना मत। इसी फकीरी को धारण करने से संसार में बड़े से बड़े कार्य हुए हैं। हमें संघ कार्य को इसी फकीरी के साथ सतत करते रहना है, तन्मयता के साथ लगे रहना है, इसमें निष्क्रियता नहीं आनी चाहिए। संघ के बाड़मेर शहर प्रांत के स्वयंसेवकों के पारिवारिक स्नेहमिलन में संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने 15 अगस्त को अपने उद्बोधन में उपर्युक्त बात कही। बाड़मेर स्थित आलोक आश्रम में आयोजित इस पारिवारिक स्नेहमिलन कार्यक्रम में पूज्य तनसिंह जी द्वारा रचित गीत 'जब गम की घटायें छायें.....' का उल्लेख करते हुए संघ प्रमख श्री ने कहा कि पूज्य श्री तनसिंह जी की बनाई इस संघरूपी बगिया में हम आये हैं तो हमें अपने आप को यहाँ की मस्ती में तन्मयता के साथ लगा देना होगा। संघ हम सभी को जीवन का अमृत पिलाना चाहता है, हम कितना पीना चाहते हैं, ये हमारे ऊपर निर्भर है। संघ ने हमें जिस कार्य के लिए पात्र समझा है, उसे सजग रहते हुए निरन्तर संलग्न रहकर करें, भटकें नहीं। इस सांसारिक आपाधापी में हम अपने लक्ष्य को ना भूलें, उसे सदैव स्मरण रखें। संघ कार्य करते समय उसे कभी भी हम भार समझकर ना करें, हमारे में किसी भी प्रकार की झिझक नहीं होनी चाहिए। उसे आनंद में लीन रहते हुए अपना कर्तव्य समझकर करें। जब जीवन में मुसीबतें आयें तो उनसे घबराने की अपेक्षा उनका डटकर मुकाबला करना चाहिए। अपनी इच्छाओं के अनुकूल जब कुछ नहीं होता है तब हम शिकायतें करते हैं लेकिन संघ में जब कोई स्वयंसेवक नियमितता और निरंतरता रखता है तब उसकी सारी शिकायतें समय के साथ स्वतः ही दूर हो जाती हैं। पूज्य श्री तनसिंह जी का हृदय दरिया के समान था, वे हम सभी के लिए सदैव प्रस्तुत रहते थे।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

बाड़मेर में सेवा पथ पुस्तिका का विमोचन

13 अगस्त को प्रातः 11 बजे बाड़मेर स्थित मधुकर भवन में कोरोना काल में प्रदेश भर में घुमंतु जातियों के लिए किये गये सेवा कार्य का पूर्ण विवरण समेटे सेवा पथ पुस्तिका का विमोचन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्री क्षत्रिय युवक संघ के संघ प्रमुख भगवान सिंह जी रोलसाहबसर, अध्यक्षता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के बाड़मेर ज़िला सह संघ चालक मनोहर जी बंसल व विशिष्ट अतिथि के रूप में युवा उद्यमी व समाजसेवी जोगेन्दर सिंह चौहान उपस्थित रहे। माननीय भगवान सिंह जी रोलसाबसर ने अपने उद्बोधन में कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ हमेशा से ही समाज में सेवाकार्य में विश्वास करता है, समाज को एकजुट करने में इनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। घुमंतु जातियों के लिए किये जा रहे कार्य के बारें में खुशी जताते हुए उन्होंने कहा कि घुमंतु जातियाँ हमारे ही समाज का अंग हैं, परिस्थिति वश इनको घुमंतु जीवन अपनाना पड़ा। महाराणा प्रताप के संघर्ष में हरावल दस्ते में ये जातियाँ उनकी सहयोगी थीं। आज वे जातियाँ मूलभूत सुविधाओं से वंचित हैं ऐसे में हमारा दायित्व बनता है कि हम उनको समाज की मुख्य धारा से जोड़ें। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा उनके लिए किये जा रहे कार्य के बारे में जानकर हर्ष ही नहीं अपितु गर्व महसूस हुआ है।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

'गहरे सागरों को पी ले, फिर भी होठ न हिले'

वीर दुगार्दास राठौड़ की जयन्ती पर जयपुर शाखा द्वारा आयोजित कार्यक्रम में माननीय महावीरसिंह जी सरवड़ी के उद्बोधन का संपादित अंश..

पूज्य श्री तनसिंह जी रचित सहगीत 'चाहे एक ही जले' की एक पंक्ति है- 'गहरे सागरों को पी ले, फिर भी होठ न हिले, ऐसी रीत चाहिए।' इसमें ऐसे आदर्श का वर्णन है जो असंभव लगने वाले कार्य को भी संभव बना दें परंतु न तो उसे इसका अहंकार हो, न ही कभी कठिनाइयों की शिकायत उसके होठों पर आये। महान वीर दुगार्दास का व्यक्तित्व ऐसा ही आदर्श व्यक्तित्व है। उनका पूरा जीवन चुनौतियों को स्वीकार करने का जीवन है। अपने 80 वर्ष के जीवन में उन्होंने कभी किसी संघर्ष से कदम पीछे नहीं हटाया। औरंगजेब जैसी प्रबल शक्ति के विरुद्ध उनका संघर्ष शौर्य और साहस की अद्भुत कहानी है। राजा न होते हुए भी इतनी बड़ी शक्ति से टक्कर लेना उनकी संकल्पशक्ति का प्रत्यक्ष प्रमाण है। जसवंतसिंह जी की मृत्यु के पश्चात मारवाड़ पर कब्जा करने की औरंगजेब की चालों को अपनी चतुराई से असफल करते हुए दुगार्दास जी ने बालक अजीतसिंह जी को सुरक्षित रखा। अपने कर्त्तव्यपालन के लिए उन्होंने किसी बात की परवाह नहीं की। उनका पूरा जीवन ही संघर्षमय रहा। छापामार युद्ध की रणनीति हो अथवा शत्रु के शत्रु को मित्र बनाने की कूटनीति हो, हर क्षेत्र में दुगार्दास जी ने सफलता प्राप्त की और शत्रु के हर प्रयास को असफल करते रहे। औरंगजेब के पुत्र अकबर को भी दुगार्दास जी ने अपनी कूटनीति से अपनी ओर मिला लिया। औरंगजेब के कारण जब अकबर पर संकट आया तो क्षत्रियोचित मर्यादा का पालन करते हुए दुगार्दास जी ने उसकी रक्षा की और उसे ईरान पहुंचाया। इतना ही नहीं, अकबर के पुत्र व पुत्री को भी उन्होंने अपने संरक्षण में रखा और उन्हें इस्लामिक शिक्षा प्रदान करने की व्यवस्था भी की। यह सभी घटनाएं उनके महान चरित्र की परिचायक हैं। अपने सुख व अपने परिवार की परवाह किए बिना जीवन भर वे अपने कर्त्तव्यपालन में लगे रहे। वे कोई राजा नहीं अपितु एक साधारण व्यक्ति थे इसी कारण उनका महान व्यक्तित्व संसार में उस प्रकार प्रसिद्ध नहीं हो पाया जैसे महाराणा प्रताप का हुआ। जबकि उनका संघर्ष, उनके व्यक्तित्व की महानता किसी से भी कम नहीं है। मध्यकालीन इतिहास में ऐसा आदर्श क्षत्रिय दूसरा नहीं हुआ। उनमें क्षत्रिय के लिए गीता में वर्णित सभी गुण विद्यमान थे। श्री क्षत्रिय युवक संघ भी उसी परंपरा का पालन कर रहा है जिसका पालन दुगार्दास जी ने किया। संघ भी अपने कर्त्तव्य को उपासना का रूप मानकर उसके पालन की शिक्षा अपने स्वयंसेवकों को दे रहा है। शाखा व शिविरों के माध्यम से कष्ट सहिष्णुता, संघर्षशीलता, न्यूनतम आवश्यकताओं में निर्वहन जैसे गुणों का शिक्षण देकर संघ अनेकों दुगार्दास के निर्माण के कार्य में रत है।

इन्द्रसिंह जी राणीगांव का देहावसान

श्री क्षत्रिय युवक संघ के वयोवृद्ध स्वयंसेवक इन्द्रसिंह जी राणीगांव का विगत 19 अगस्त को रात्रि 10.15 बजे देहावसान हो गया। वे पहली बार 1971 में संघ के शिविर में आए। उन्होंने अपने जीवन काल में 24 उ.प्र.शि., 31 मा.प्र.शि., 36 प्रा.प्र.शि. एवं 7 विशेष शिविर किए। (शेष पृष्ठ 2 पर)

संघ साहित्य के ऐतिहासिक संदर्भ

पूज्य तनसिंह जी ने अपनी पुस्तक 'बदलते दृश्य' में बीकानेर राज्य के महाराजा दलपतसिंह का उल्लेख किया है। इस बार हम उनके बारे में जानेंगे।

बीकानेर के शासक महाराजा रायसिंह के ज्येष्ठ पुत्र दलपतसिंह का जन्म वि.सं. 1621 में हुआ। उनकी माता जसमा दे महाराणा उदयसिंह की पुत्री थी। दलपतसिंह प्रारम्भ से ही विद्रोही स्वभाव के थे, उनके पिता रायसिंह जहां शाही सेवा में थे वहीं दलपतसिंह अनेकों बार शाही आज्ञाओं की खुलेआम अवज्ञा करते थे। उनके विद्रोही स्वभाव के कारण उनसे नाराज महाराजा रायसिंह ने भी एक-दो अवसर पर दलपतसिंह के विरुद्ध सैन्य कार्रवाई की परन्तु दलपतसिंह हर बार विजयी रहे। बादशाह जहांगीर के एक सेनानायक जावदी खां ने सिरसा पर आक्रमण कर जहियों और भाटियों को परास्त कर वहां अधिकार कर लिया। तब दलपतसिंह ने सिरसा पर आक्रमण कर जावदी खां को परास्त कर वहां से मार भगाया। जहांगीर को ये समाचार मिलने पर उसने दलपत सिंह के विरुद्ध एक बड़ी सेना भेजी। शाही सेना से नागौर में अनिर्णित संघर्ष के बाद दलपतसिंह पहले मारोठ और फिर भटनेर चले गए। दलपतसिंह के व्यवहार से रुष्ट महाराजा रायसिंह अपने एक अन्य पुत्र सूरसिंह को अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहते थे। दक्षिण में बुरहानपुर में महाराजा रायसिंह की मृत्यु के बाद वि.सं. 1668 में दलपतसिंह बीकानेर के राज सिंहासन पर बैठे। बीकानेर के शासक बनने के बाद अपने पिता के स्थान पर वह शाही सेवा में गए जहां जहांगीर द्वारा उनका सम्मान किया गया। कुछ समय बाद जहांगीर द्वारा उन्हें मिर्जा रुस्तम का सहायक बनाकर ठट्ठा भेजा गया। स्वतंत्र स्वभाव के दलपतसिंह शाही सेवा में स्वयं को बंधनों में जकड़ा पा रहे थे इसलिए शाही आज्ञा का उल्लंघन कर ठट्ठा जाने के स्थान पर वो अपने राज्य बीकानेर चले गए। महाराजा रायसिंह ने अपने जीवन काल में ही अपने छोटे पुत्र सूरसिंह को 84 गांवों सहित फलोदी का परगना दिया हुआ था। अपने पुरोहित मान महेश के कहने पर दलपतसिंह ने फलोदी के अतिरिक्त अन्य सभी गांव खालसा कर लिए। इससे नाराज सूरसिंह सहायता के लिए दिल्ली जहांगीर के पास चला गया। दलपतसिंह के व्यवहार से शंकित जहांगीर ने इसे अच्छा अवसर जानकर जावदीन खां को एक विशाल सेना लेकर सूरसिंह की सहायता के लिए भेजा। सूरसिंह के शाही सेना के साथ आने का समाचार मिलने पर दलपतसिंह अपनी सेना सहित शाही सेना का सामना करने छापर आ गए। दोनों पक्षों में भयंकर युद्ध हुआ। दलपत सिंह की वीरता और कुशल सैन्य संचालन के सामने शाही सेना को परास्त होकर मैदान छोड़ना पड़ा। जावदीन खां युद्ध क्षेत्र से भाग गया और दिल्ली से और सैनिक सहायता मंगवाई। इधर सूरसिंह ने दलपतसिंह के लगभग सभी सरदारों को अपनी ओर मिला लिया दिल्ली से और शाही सेना आने पर जब युद्ध हुआ तो दलपत सिंह की ओर से केवल ठाकुरसी जीवणदासोत ने ही युद्ध में भाग लिया, अन्य सरदारों के असहयोग और धोखे के कारण दलपतसिंह की पराजय हुई और उन्हें बंदी बना लिया गया। बंदी बना कर दलपतसिंह को अजमेर भेज दिया गया जहां आनासागर के नजदीक महल में सैनिकों की निगरानी में कैद कर दिया गया। उन्हीं दिनों एक राजपूत युवक चांपावत हाथीसिंह अपने कुछ साथियों के साथ अपनी पत्नी को ससुराल से लिवा लाने जा रहा था जो आराम के लिए आना सागर के किनारे ठहरा तब कुछ युवतियों ने, जो वहां से गुजर रही थी, उलाहना दिया कि तुम वैवाहिक जीवन के सुखों के स्वप्न देख रहे हो और वहीं तुम्हारा अग्रज भाई बंदी जीवन व्यतीत कर रहा है। इन शब्दों से उद्वेलित हाथीसिंह ने अपने साथियों को कहा कि जीवन का सार्थक करने का ऐसा सुअवसर फिर पता नहीं कब आए और केसरिया धारण कर महल के रक्षकों पर टूट पड़े। उन्हें मार कर दलपतसिंह को मुक्त करा लिया। अजमेर के सूबेदार को जब रक्षकों के मारे जाने व दलपतसिंह के मुक्त होने का समाचार मिला तो उसने तुरन्त अपने चार हजार सैनिकों के साथ दलपतसिंह, हाथीसिंह को घेर लिया। दलपतसिंह, चांपावत हाथीसिंह और उनके साथी वीरता पूर्वक मुगलों से युद्ध करते हुए वि.सं. 1670 को फाल्गुन बदी एकादशी को वीरगति को प्राप्त हुए।

संदर्भ ग्रंथ : (1) बीकानेर राज्य का इतिहास : पं. गौरीशंकर हीराचंद ओझा।

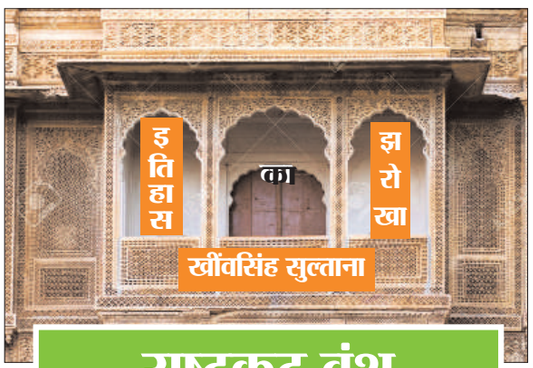

राष्ट्रकूट वंश

इन्द्र तृतीय के बाद राष्ट्रकूट साम्राज्य को कुछ कमजोर शासकों का शासन काल देखना पड़ा जिससे राष्ट्रकूट साम्राज्य की सीमाएं सिकुड़ गई यद्यपि इन शासकों का काल अत्यल्प रहा परन्तु उनके कमजोर शासन का लाभ राष्ट्रकूट साम्राज्य के पड़ौसी राज्यों और अधीनस्थ सामन्तों ने उठाया। 939 ई. में कृष्ण तृतीय शासक बना, राज्यारोहण के समय उसने 'अकालवर्ष' की उपाधि धारण की। अपने पूर्ववर्ती कमजोर शासकों के विपरीत वह एक कुशल सेनानायक साम्राज्यवादी शासक था। शासक बनने के बाद प्रारंभिक वर्षों को उसने राज्य की आन्तरिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने में लगाए तदुपरान्त उसने अपना विजय अभियान प्रारम्भ किया। सर्वप्रथम उसने चोलों के विरुद्ध अभियान किया और चोल शासक परान्तक को परास्त कर कांची और तंजौर पर अधिकार कर लिया, कुछ काल बाद राष्ट्रकूट और चोलों के मध्य तक्कोलम नामक स्थान पर निर्णायक युद्ध हुआ, भयानक युद्ध में चोल युवराज राजादित्य मारा गया, कृष्ण तृतीय चोल राज्य को जीतता हुआ रामेश्वरम् तक जा पहुंचा और वहां एक विजय स्तम्भ स्थापित किया, राष्ट्रकूट लेखों से पता चलता है कि इसके बाद उसने पाण्ड्य, केरल तथा लंका के शासकों को भी परास्त किया। इसके बाद कृष्ण तृतीय ने उत्तर भारत की ओर सैन्य अभियान किया। सर्वप्रथम उसने बुन्देलखण्ड के चन्देलों को परास्त किया, 963 ई. में उसने मालवा के परमार शासक सीयक को परास्त कर उज्जयिनी पर अधिकार कर लिया। कुछ समय तक वेंगी पर भी कृष्ण तृतीय का अधिकार रहा। इस प्रकार कृष्ण तृतीय अपने वंश के महानतम शासकों की श्रृंखला का अंतिम शक्तिशाली शासक था। सही अर्थों में वह सम्पूर्ण दक्षिणापथ का सार्वभौम शासक था। उसने 967 ई. तक शासन किया। कर्क द्वितीय इस वंश का अन्तिम शासक था। राष्ट्रकूट राजवंश का काल दक्षिणापथ के इतिहास का सबसे गौरवमय काल था। इस वंश के प्रतापी शासकों ने दक्षिण और उत्तर में अपनी विजय पताका को फैलाया। उन्होंने अपने समकालीन प्रबल शक्तियों चोलों, पाण्ड्यों, चालुक्यों, पालों और प्रतिहारों को अनेक बार परास्त किया। राष्ट्रकूटों के अतिरिक्त दक्षिणापथ से केवल मराठे ही ऐसी शक्ति थी जिसने उत्तर और दक्षिण की राजनीति को इतना प्रभावित किया। विजेता होने के साथ राष्ट्रकूट शासक कला और साहित्य में भी गहरी रुचि रखते थे। राष्ट्रकूट शासकों ने कन्नड़ तथा संस्कृत को खूब बढ़ावा दिया। उनके दरबार में उच्च कोटि के विद्वान रहते थे जिनमें आदिपुराण के लेखक जिनसेन, 'गणित सार संग्रह' के रचियता 'महावीर चार्य' तथा 'अमोधवृति' के लेखक 'साकतायन' प्रमुख थे। अमोधवर्ष ने कन्नड़ भाषा का प्रसिद्ध ग्रन्थ 'कविराजमार्ग' लिखा। महाराष्ट्र में एलोरा पहाड़ी पर बने अधिकांश गुहा मंदिरों का निर्माण राष्ट्रकूट शासकों द्वारा करवाया गया। इसमें से कृष्ण प्रथम द्वारा बनवाया गया 'कैलाश मंदिर' अपनी आश्चर्य जनक शैली के लिए विश्व प्रसिद्ध है यह मंदिर प्राचीन भारतीय वास्तुकला का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है। **(क्रमशः)**

(पृष्ठ एक का शेष)

संघ हमें... हमें भी उनके जैसा बनने का प्रयास करना चाहिए। संघ कार्य करते समय हम इतने तन्मय हो जायें कि हमसे बिछड़ने वाले, नाराज होने वाले साथियों को बस इतना ही कह सकें कि अभी आप भटकते हो, नाराज होते हो तो भले ही हो जाओ, हमें फुर्सत नहीं है आपको मनाने की, क्योंकि हमें पूज्य श्री तनसिंह जी की फरियाद को प्रत्येक राजपूत के घर तक पहुँचाना है। उसके लिए हमें अपने दुःख दर्द का भी भान नही रहना चाहिए। जब तक हम यह कार्य कर नहीं लेते तब तक आराम कैसा ? मिल बैठकर बात करना कैसा ? निश्चत रूप से एक दिन वह वेला आयेगी जब हम मिलकर अपने दुःख दर्द की भी बात करेंगे लेकिन अभी यह सब करने को समय कहां? अभी तो हमें केवल अपने लक्ष्य का ध्यान रहना चाहिए। स्वतंत्रता दिवस की शाम को रखे गये इस पारिवारिक स्नेहमिलन में बाड़मेर शहर में रहने वाले संघ बंधु अपने परिवार सहित शामिल हुए एवं सभी ने साथ में भोजन किया।

बाड़मेर... मनोहर जी बंसल ने बताया कि घुमंतु जातियों का निवास एक स्थान पर नहीं होता इसलिए घुमंतु जातियों के कोई सरकारी दस्तावेज भी नहीं बन पाते। उसी वजह से घुमंतु जातियों को मतदान का अधिकार भी नहीं मिल पाता है । ऐसी जातियों को मुख्य धारा में जोड़ने के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की घुमंतु टोली कार्यरत है। घुमंतु कार्य के अखिल भारतीय प्रमुख दुर्गा दास जी के निर्देशन में पूरे देश में घुमन्तु जातियों के उत्थान के लिए कार्य किया जा रहा है । इसी कड़ी में प्रदेश भर में घुमंतु जातियों के बच्चों को शिक्षा देने के लिए जयपुर, दौसा, भरतपुर, जालोर, बाड़मेर व श्रीगंगानगरमें छात्रावास चल रहे हैं। यहाँ पर बच्चों को शिक्षा व रहने की पूर्ण व्यवस्था राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की द्वारा की जाती है। कार्यक्रम में बताया गया कि संघ के स्वयंसेवकों ने प्रयास करके 1500 लोगों के राशन कार्ड, 1100 आधार कार्ड, 200 जन आधार कार्ड, 200 मजदूर कार्ड व 300 व्यक्तियों के वृद्धावस्था पेंशन, 106 को आवास हेतु पट्टे दिलवाये तथा 40 व्यक्तियों को प्रधानमंत्री आवास योजनांतर्गत ऋण सहायता दिलवाने में सहायता दी गई। महादेव गुरूकुल (घुमंतु छात्रावास)के अध्यक्ष विक्रम सिंह तारातरा ने सेवा पथ पुस्तक की प्रस्तावना का पाठ किया। कार्यक्रम का संचालन ज़िला प्रमुख घुमंतु जाति कार्य मेघराज सिंह राजपुरोहित ने किया।

इन्द्रसिंह जी... जालोर, सिरोही एवं पाली जिले में संघ के काम को विस्तार देने में आपका विशेष प्रयास रहा एवं लगातार यात्राएं कर पूज्य तनसिंह जी के संदेश को प्रसारित करने में योगदान दिया। आपकी स्मृति एवं अपनत्व अनुकरणीय थी। वृद्धावस्था में भी मिलने वाले से सबका नाम लेकर समाचार पूछा करते थे। डाइट बाड़मेर में वरिष्ठ व्याख्याता के पद से सेवानिवृत आदरणीय माट्साब एक अच्छे शिक्षक के रूप में बाड़मेर में प्रतिष्ठित थे। सदैव पारंपरिक वेशभूषा में ही रहते थे। आपके तीनों पुत्र एवं उनका परिवार भी संघ से जुड़े हुए हैं। परमेश्वर सम्मानीय माट्साब को अखंड शांति प्रदान करें एवं परिवार जनों को संबल प्रदान करें। माननीय संघ प्रमुख श्री ने उनकी अन्तिम यात्रा में शामिल होकर अपने इस साथी को श्रद्धांजलि अर्पित की।

जारी रही वर्चुअल कार्यशालाएं एवं बैठकें

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन द्वारा वर्चुअल माध्यम से कार्यशालाएं एवं बैठकें विगत पखवाड़े में भी जारी रहीं। सूचना तकनीक क्षेत्र के विभिन्न आयामों पर कार्यशालाओं की श्रृंखला में 15 अगस्त को डेटावेयर हाऊस टेक्नोलॉजी के बारे में वेबिनार आयोजित की गई। 22 अगस्त को सेल्स फोर्स एवं इसके मोड्यूल विषय पर वेबिनार हुई। इनमें इन विषयों की सामान्य जानकारी के साथ-साथ इनमें रोजगार की संभावनाओं एवं आवश्यक योग्यताओं पर चर्चा की गई। 16 अगस्त को ग्रामसभा के अधिकार एवं दायित्व विषय पर एक वेबिनार आयोजित की गई जिसमें रामसिंह चरकड़ा एवं प्रतापसिंह कुमास ने ग्रामसभा के बारे में बताते हुए कहा कि राष्ट्रीय स्तर पर जिस प्रकार संसद एवं राज्य स्तर पर जिस प्रकार विधानसभा होती है उसी प्रकार ग्राम पंचायत स्तर पर ग्रामसभा होती है। ग्रामसभा ग्राम पंचायत की मातृ संस्था होती है। सिद्धान्ततः उसकी अनुमति के बिना ग्राम पंचायत कुछ नहीं कर सकती लेकिन व्यवहार में जागरुकता के अभाव में ऐसा नहीं हो पाता।

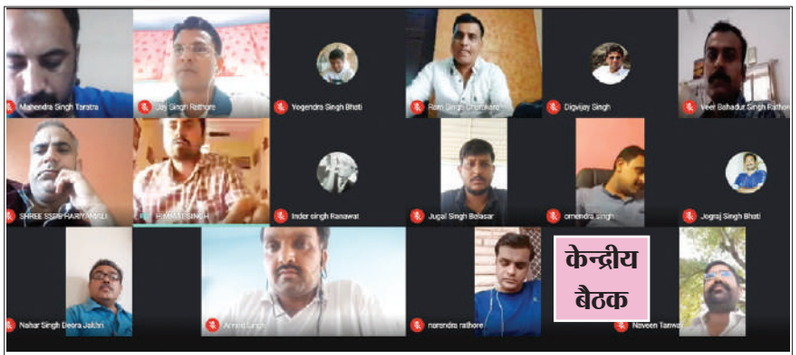

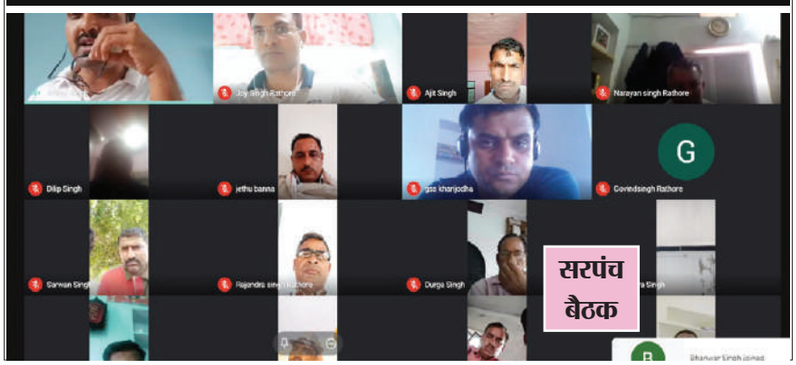

प्रति माह ग्रामसभा की दो बैठकें अनिवार्य होती हैं लेकिन व्यवहार में केवल कागजी कार्रवाई होने के कारण ग्रामसभा का ग्राम पंचायत पर कोई नियंत्रण नहीं होता। इसीलिए जागरूक नागरिकों को इस विषय में सक्रियता निभानी चाहिए। 21 अगस्त को राजस्थान सम्पर्क पोर्टल, जिला जन अभाव अभियोग समिति एवं जिला सतर्कता समिति की कार्य प्रणाली की जानकारी के लिए वेबिनार आयोजित की गई। यशवर्धनसिंह झेरली, रामसिंह चरकड़ा एवं प्रतापसिंह कुमास ने इन तीनों के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि सम्पर्क पोर्टल सरकारी सुविधाओं एवं कार्यों के बारे में सामान्य शिकायतों के निवारण का उपयुक्त प्लेटफार्म है जिसका सबको अधिकतम उपयोग करना चाहिए। जन अभाव अभियोग समिति की जिला स्तर पर बैठकें होती है जिनमें कोई भी नागरिक उपस्थित होकर अपनी शिकायत या समस्या पेश कर सकता है। समिति की बैठक में सभी जिला स्तरीय अधिकारी बैठते हैं इसलिए समाधान होने में सुविधा रहती है। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

ऑनलाईन समीक्षा एवं बैठकें

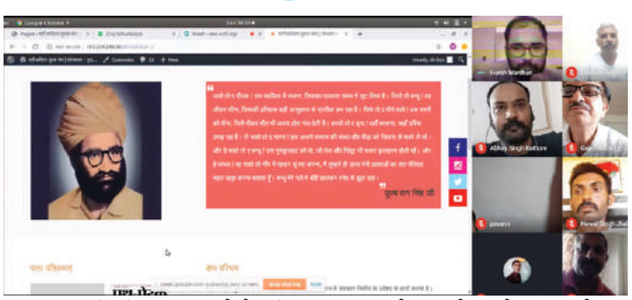

महामारी की परिस्थितियों के बीच शिविरों, मैदानी शाखाओं एवं स्नेहमिलन आदि भौतिक कार्यक्रम न करने के कारण संघ के स्वयंसेवकों के बीच सम्पर्क हेतु ऑनलाईन सम्पर्कों, बैठकों एवं समीक्षा का दौर इस पखवाड़े में भी जारी रहा। प्रति सप्ताह केन्द्रीय कार्यकारियों के साथ संचालन प्रमुख जी ने समीक्षा की। 8 अगस्त को संभाग प्रमुखों के साथ हुई केन्द्रीय सहयोगियों की बैठक में एक साप्ताहिक रिपोर्ट का सिस्टम प्रारम्भ किया गया। सभी प्रांत प्रमुखों के माध्यम से संघ के प्रत्येक स्वयंसेवक से सम्पर्क का कार्यक्रम बना। सम्पर्क के द्वारा स्वयंसेवकों से प्रतिदिन एक घंटा शाखा के निमित्ति देने एवं संघ के सहयोगी स्वयंसेवकों, उभरते स्वयंसेवकों व सहयोगी समाज बंधुओं से निरन्तर सम्पर्क करने हेतु प्रोत्साहित करने का कार्यक्रम बना। प्रति सप्ताह संभाग प्रमुखों के माध्यम से केन्द्र तक इसकी रिपोर्ट की गई। 23 अगस्त को इस कार्य की समीक्षा हेतु पुनः संभाग प्रमुखों के साथ केन्द्रीय बैठक आयोजित हुई। बैठक में तय किया गया कि अब यह रिपोर्टिंग साप्ताहिक की अपेक्षा पाक्षिक की जाएगी। संभाग प्रमुख अपने संभाग स्तर पर प्रांत प्रमुखों एवं अन्य सहयोगियों के साथ ऐसी ही समीक्षा बैठकों को करेंगे। अभी सरकारी गाईडलाईन के अनुसार व्यक्तिगत सम्पर्क पर ही बल देना है। सार्वजनिक स्नेहमिलन आदि कार्यक्रमों से अभी बचना है एवं शिविर भी नहीं लगाने हैं। 22 अगस्त को संघ की वेबसाईट के नवीनीकरण के कार्य की प्रगति की समीक्षा की गई। संचालन प्रमुख के सानिध्य में हुई इस बैठक में पवनसिंह बिखरणिया, हर्षवर्धनसिंह रेड़ा आदि ने इस कार्य की अब तक की प्रगति का ब्यौरा दिया एवं आवश्यक संशोधन पर चर्चा हुई। 24 अगस्त को संघ की सोशल मीडिया टीम की गुगल मीट रखी गई। सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफार्मस पर प्रभावी उपस्थिति को लेकर चर्चा की गई।

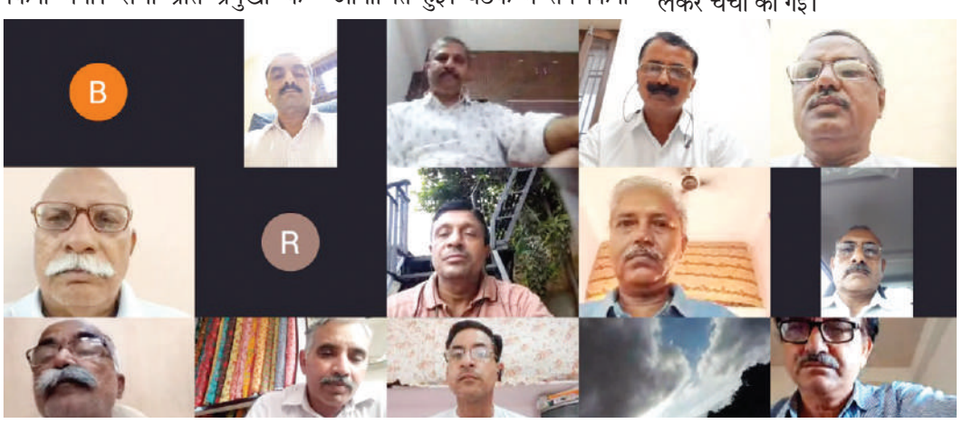

बनासकांठा प्रांत में कार्य योजना बैठक

संघ के मेहसाणा संभाग में बनासकांठा प्रांत के पूज्य हरिसिंह गढ़ुला मंडल (वडगाम, पालनपुर, दांता अमीरगढ़) की कार्ययोजना बैठक 15 अगस्त को वाराही माता मंदिर नगाणा में रखी गई। बैठक में संघ के स्वयंसेवकों के साथ-साथ सहयोगियों ने भी भाग लिया। पूर्व सैनिक जसवंतसिंह, रामसिंह धोता आदि ने संघ का संदेश प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंचाने के लिए निरन्तर सक्रियता की आवश्यकता बताई। प्रांत प्रमुख अजीतसिंह कुणधेर ने वासणा, मेता, चांगा, मालण, धाणधा, भागल, महोवरगढ़, गंगवा, जोमता, मोटासड़ा, मामवाड़ा आदि में सम्पर्क करने व शाखा की संभावना पर चर्चा की। उन्होंने संघ को पूज्य तनसिंह जी की व्यथा बताया एवं उस व्यथा को महसूस करने की आवश्यकता जताई।

संघ चर्चा एवं रात्रि विश्राम

19 अगस्त को छापड़ा गांव के स्वयंसेवकों की बैठक प्रांत प्रमुख उगमसिंह गोकुल की उपस्थिति में रात्रि 8 से 11 बजे तक रखी गई। बैठक में केन्द्रीय वर्चुअल शाखा, नागौर संभाग की संभागीय ऑनलाईन शाखा को लेकर चर्चा की गई एवं सभी से इसमें शामिल होने को कहा गया। 28 जुलाई 2020 को हुई संभागीय बैठक में जो लोग शामिल नहीं हुए उन्होंने अपने-अपने कारण बताए। संघ कार्य में नियमितता बनाए रखने के उपायों पर चर्चा की गई एवं नवोदित स्वयंसेवकों से निरन्तर सम्पर्क रखने के उपायों पर बात की गई। 20 अगस्त को प्रातः शाखा के उभरते स्वयंसेवकों से मिलने के पश्चात बैठक विसर्जित हुई।

21 अगस्त को लाडनूं सुजानगढ़ प्रांत प्रमुख विक्रमसिंह ढींगसरी की उपस्थिति में संघ चर्चा एवं रात्रि विश्राम का कार्यक्रम भगवान सिंह रताऊ के निवास पर रखा गया। चर्चा में संघ कार्य की निरन्तरता, पारिवारिक दायित्व एवं संघ कार्य, स्वयं के भीतर ऊर्जा पैदा करने वाले उपक्रम आदि विषयों पर उपस्थित स्वयंसेवकों ने चर्चा की। प्रातःकाल शाखा लगाकर विदा हुए।

संपादकीय

विचार भिन्नता और एकता

भारतीय संस्कृति सदैव योगपरक रही है। योग भारतीय दर्शन का लक्ष्य रहा है। योग का यहां अर्थ कुछ शारीरिक क्रियाएं या सांस को ऊपर नीचे खींचना नहीं है। भारत में यह परम्परा रही है कि अपनी बात को पुष्ट करने के लिए, उसका महत्व एवं प्रमाणिकता बढ़ाने के लिए उसको भारत की श्रेष्ठतम शब्दावली से जोड़ देते है, उसी प्रकार शारीरिक स्वास्थ्य के लिए की जाने वाली क्रियाओं को भी योग नाम दे दिया गया है लेकिन योग का वास्तविक अर्थ तो मिलन है। जीव का ब्राह्म से मिलन, आत्मा का परमात्मा से मिलन और मिलकर एकाकार होना ही योग है। इसी अर्थ में योग भारतीय दर्शन का लक्ष्य है। मिलन का दूसरा नाम ही एकता है, एकता ही योग के रूप में घटित होती है। इस प्रकार भारतीय संस्कृति एकता परक दर्शन पर अवलंबित है। इसीलिए यहां विभिन्न प्रकार की एकताओं की चर्चा की जाती है जो उत्तरोत्तर सम्पूर्ण एकता की ओर बढ़ने के सोपान हैं। लेकिन आधुनिक दर्शन पर भारतीयता की अपेक्षा पश्चिम का अधिक प्रभाव है। पश्चिम समग्रता की अपेक्षा इकाई को महत्व देता है। इकाई अपने पृथक अस्तित्व को बचाकर रखना चाहती है क्यों कि इससे ही उसका इकाई पना सुरक्षित रहता है इसीलिए वहां मिलन की अपेक्षा, योग की अपेक्षा या एकता की अपेक्षा भिन्नता को पोषित किया जाता है। भिन्नता को पसंद किया जाता है। यही एकता और भिन्नता ही आज के हमारे चिंतन का विषय है। इन विभिन्न प्रकार की एकताओं एवं विभिन्नताओं की बात विचारों को लेकर भी की जाती है। भारत का आधुनिक वर्ग अपना आदर्श विगत 200-250 वर्षों में ढूंढता है जब भारत पश्चिम की संस्कृति के निकट सम्पर्क में आया। उससे पहले भी ऐसा सम्पर्क था लेकिन उससे भारतीय विचार दर्शन का स्वरूप नहीं बदला क्यों कि भारत का चिंतन उस सम्पर्क के प्रभाव को हेय मानता था लेकिन उन्नीसवी सदी में भारतीय चिंतन का झुकाव पश्चिम की तरफ हुआ। पश्चिम के आगे अपने आपको बौना मानने की प्रवृत्ति ने उनके विचार दर्शन में आदर्श ढूंढने की प्रवृत्ति को जन्म दिया और उसी का परिणाम है कि 19वीं सदी के हमारे सभी नायक विचार भिन्नता के समर्थक रहे हैं और आज भी अपने आपको समझदार कहने वाले तथाकथित आधुनिक लोग विचार भिन्नता का समर्थन करते हैं। हमारे यहां राजस्थान के एक हिंदी समाचार पत्र ने तो अपने ध्येय वाक्य में ही लिख रखा है कि 'हो सकता है मैं आपके विचारों से सहमत न हो पाऊं फिर भी विचार प्रकट करने के आपके अधिकारों की रक्षा करूंगा।' वाल्तेयर महोदय के इस संदेश की आलोचना का कोई प्रश्न नहीं है। एक सीमा तक यह सही हो सकता है लेकिन भारत इससे आगे की बात करता है। वह इस विचारों की असहमति को सहमति की ओर बढ़ाने की बात करता है। उनमें व्याप्त भिन्नता को न्यून करते करते समाप्त करने को श्रेष्ठ मानता है। इसीलिए वेद का ऋषि विचारों की समानता की बात करता है। वह 'समानोमंत्र समिति समानी' की बात करता है। इससे भी आगे 'समानी वः आकुति' की बात करता है। ऐसा हुए बिना एकता नहीं हो सकती, मिलन नहीं हो सकता, एकाकार नहीं हुआ जा सकता और जहां एकता, मिलन, और एकाकार होने की संभावना नहीं हो वहां अंत में विघटन ही होता है। मार्ग अलग-अलग हो जाया करते हैं। लक्ष्य एक होने के बावजूद शक्ति का विभिन्न दिशाओं में गमन उसको क्षीण करने का कारण हो सकता है।

विचार भिन्नता को स्वीकार कर साथ चलने का दावा करने वाले ऐसे सभी लोगों के जीवन को देखें तो हम पाएंगे कि वे अंत समय तक साथ नहीं रह पाए और परिणाम स्वरूप उनकी शक्ति क्षीण हुई। हम हमारे आजादी के आंदोलन को देखें तो ऐसे अनेक उदाहरण मिल सकते हैं। नेताजी सुभाषचंद इसके अच्छे उदाहरण हैं। तत्कालीन समय में देश में उपलब्ध नेतृत्व में सर्वश्रेष्ठ लोगों में से एक थे नेताजी, लेकिन कांग्रेस पर अनौपचारिक रूप से प्रभुत्व रखने वाले नेताओं से विचार भिन्नता के कारण कांग्रेस के निर्वाचित अध्यक्ष होने के बावजूद उन्हें इस्तीफा देना पड़ा। अंत में देश छोड़कर जाना पड़ा और जर्मनी, रूस, जापान होते हुए अपनी मुहीम को दूसरे तरीके से पूरा करने का प्रयास करना पड़ा। विचार करें कि यदि उस समय पश्चिम की विचार भिन्नता उनका आदर्श न होकर भारत का 'समानो मंत्र समिति समानी' आदर्श होता तो क्या ऐसा होता? अभी विगत दिनों महामना लोकमान्य तिलक पर एक पुस्तक पढ़ने को मिली। उसके अनुसार तिलक और आगरकर दोनों अच्छे मित्र थे। 1873 से 1876 तक कॉलेज में साथ पढ़े। 1880 में दोनों ने विष्णु चिपलूणकर के साथ मिलकर न्यू इंग्लिश स्कूल आरम्भ की। 1884 में डेक्कन एजुकेशन सोसायटी बनाई। 1885 में फर्ग्युशन कॉलेज शुरू की। 1885 में मराठा एवं केसरी अखबार शुरू किया। दोनों ने चार माह की प्रथम जेल यात्रा एक साथ की लेकिन 1887 में वैचारिक मतभेद के कारण अलग हो गए। आगरकर ने अलग अखबार निकालना प्रारम्भ कर दिया और तिलक ने कॉलेज व डेक्कन एजुकेशन सोसायटी छोड़ दी। यह बात सामान्य सी लगती है लेकिन इसकी तह में विचार भिन्नता थी जो उनके सम्पर्क के प्रारम्भ में ही मौजूद थी। ऐसा उस पुस्तक में लिखा है और बताया है कि दोनों के विचार अलग-अलग थे लेकिन फिर भी अच्छे मित्र थे। लेकिन कालांतर में विचार भिन्नता से मित्रता को मिटा दिया। यह एक उदाहरण नहीं है बल्कि हम ढूंढे तो ऐसे लाखों उदाहरण मिलेंगे। इसीलिए भारत का विचार दर्शन विचार भिन्नता को समाप्त करने की बात करता है। विचार भिन्नता का होना गलत नहीं है लेकिन उसे अच्छा बताना, महिमामंडित करना या उसे बरकरार रखने में गौरव महसूस करना गलत है क्योंकि इसी कारण विचारों की एकता की ओर हम नहीं बढ़ पाते और यही विचार

खरी-खरी

'नव नेताओं के नाम पाती'

प्रिय नेताजी, आप राजनीति में अपना भाग्य आजमाने को तत्पर हुए हो, यह हमारे लिए प्रसन्नता का विषय है क्यों कि राजनीति और हमारे समाज का सदा से ही निकट का संबंध रहा है। राजनीति के गलियारों में हर जगह इतिहास में मेरे इस महान समाज के हस्ताक्षर मौजूद हैं और आप इस परम्परा को आगे बढ़ाने को उद्यत हुए हैं इसलिए हमारी शुभकामनाएं सदैव आपके साथ हैं। हम चाहते हैं कि आप राजनीति के आसमान के चमकते सितारें बनें और सम्पूर्ण राष्ट्र में अपना प्रकाश फैलाएं। लेकिन आज की राजनीति का मिजाज कुछ बदला-बदला सा है। आपसे पहले भी इस बदले मिजाज में अपना भाग्य आजमाने को अनेक बंधु मैदान में उतरे हैं, कुछ आगे बढ़े हैं और कुछ पीछे छूट गए हैं। उन सभी की यह चाह रही है कि समाज सदैव उनके साथ रहे और आपकी भी ऐसी ही चाह अवश्य होगी। होनी भी चाहिए क्यों कि आज के तंत्र में राजनीति में जिस व्यक्ति के पीछे उसका समाज लामबद्ध होता है उसको स्वतः एक सुरक्षा मिल जाती है जो इस तंत्र में उसे निर्वाह करने में सहायक होती है। आज की पूरी राजनीति में किसी भी प्रकार का पद एवं अवसर मिलने के कारकों में जाति एक महत्वपूर्ण कारक है। इसलिए आपकी अपेक्षा भी जायज है और समाज का इस हेतु किया जाने वाला प्रयास भी जायज है। समाज इस हेतु प्रयास भी करता है। समाज के अनेक लोग भी इस हेतु प्रयास भी करते हैं कि सम्पूर्ण समाज में आपके आगे बढ़ने के अनुकूल वातावरण बने, सम्पूर्ण समाज आपके आगे बढ़ने में सहयोगी बने। लेकिन यह तो समाज की बात है, जो समाज आपके लिए करे उसकी बात है और इसलिए यह बात तो समाज को कही जानी चाहिए। लेकिन यह पाती तो आपके नाम लिखी जा रही है इसलिए इसमें तो वह बात की जाए जिसकी आपसे अपेक्षा है। तो नेताजी, आपसे पहली ही बात तो यह करनी है कि यह कौम हमारी मां है। इस कौम ने हमें एक पहचान दी है, एक उज्ज्वल पूर्वज परम्परा दी है, गौरवशाली इतिहास दिया है, राजनीति में नेतृत्व क्षमता के उन्नत वंशानुगत गुण दिए हैं, स्वाभाविक रूप से नेतृत्व करने जैसा माहौल दिया है। इसने जो हमें दिया है उसके बल पर ही हम हमारे आत्म विश्वास को एक मजबूत धरातल पर खड़ा पाते हैं और वहीं धरातल हमारे पांवों को जमाने में जमा रहा है। इसने जो दिया है वह अतुलनीय है, अवर्णनीय है। सबसे बड़ी बात यह है कि इसने हमें अपने आंचल में जन्म दिया है इसीलिए हम इसे मां कहकर संबोधित करते हैं। तो नेताजी, यह आपकी भी उतने ही अर्थों में मां है जितने अर्थ में यह एक सामान्य राजपूत की मां है। आप इसके बेटे होने के अधिकार को जताकर अपने उस भाई से जो सहयोग की अपेक्षा करते हो, जिस बंधुत्व की भावना के कारण अपेक्षा करते हो वैसी ही अपेक्षा वह आप से भी करता है। आप उससे अपेक्षा करते हो कि राजनीति में जहां वोट की जरुरत हो वह आपको वोट दे क्यों कि आप उसी मां की संतान है जिसकी वह संतान है। आप चाहते हैं कि वह वोट नहीं दे सकता तो आपको सपोर्ट करे, आपकी बात का समर्थन करे, जहां आपके साथ खड़े होने की जरूरत हो वह साथ खड़ा रहे और इसमें भी आगे कि जहां आपको आगे खड़ा कर उसे पीछे खड़ा रहना है वहां वह पीछे भी खड़ा रहे क्योंकि आपको राजनीति में आगे जो दिखाना है। आपकी यह अपेक्षा गलत नहीं है इसलिए आपका वह सजातीय बंधु सदैव यह प्रयत्न करता है। वह आपको जानता नहीं तो भी सहयोग करता है। वह आपकी उन्नति को देखकर प्रसन्न होता है और अवनति को देखकर दुखी होता है। आपके प्रति उसके दिल से सदैव शुभकामनाएं ही निकलती है। लेकिन इन सबके बदले में वह आप से भी एक छोटी सी अपेक्षा करता है कि आप उसे अपना भाई माने या न माने लेकिन कम से कम इस मां को अपनी मां तो माने। कभी अपनी राजनीतिक रोटियां सेंकने के लिए इस मां की लज्जा को ईंधन बनाने से बचें। आप नए नवेले है, अभी राजनीति के समुद्र में तैरने के लिए हाथ पांव मार रहे हैं इसलिए आपको वह अभी से अपनी बात कहना चाहता है कि कम से कम आप तो ऐसा मत करना। क्योंकि आप से पहले वाले ऐसा करते रहे हैं और कर भी रहे हैं। और तो और ऐसा करके भी वे अपने आपको इस कौम का सबसे बड़ा हितैषी होने की बेशर्म घोषणा भी करते रहे हैं और कर रहे हैं, कम से कम आप तो ऐसा मत करना।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

प्रतिभाएं

रावलसिंह पुत्र मोहनसिंह गांव अजासर (पोकरण) ने 10वीं में 81.67 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

अनवरसिंह पुत्र वीरसिंह निवासी खुहड़ी (जैसलमेर) ने 10वीं में 84.17 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

मदनसिंह पुत्र मगसिंह गांव महेशो की ढाणी (जैसलमेर) ने 10वीं में 80.33 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

मरुधरासिंह पुत्री मनोहरसिंह निवासी लाठी (जैसलमेर) ने 10वीं में 83.17 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

गोपालसिंह पुत्र शम्भूसिंह निवासी बडोड़ागांव (जैसलमेर) ने 10वीं में 88.87 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

मोहनसिंह पुत्र उम्मेदसिंह निवासी सनावड़ा (जैसलमेर) ने 10वीं में 87 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

कैलाश भाटी पुत्री नरपतसिंह निवासी हमीरा (जैसलमेर) ने 10वीं में 82.80 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

भूवनेश्वरी चुंडावत पुत्री भवानीसिंह निवासी लुहारिया (भीलवाड़ा) ने 12वीं में 97.4 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

निष्ठा कंवर पुत्री शिवसिंह निवासी जामौली (भीलवाड़ा) ने 10वीं में 80.40 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

पवन कंवर पुत्री धर्मेन्द्र सिंह निवासी जिनजिनयाला कल्ला जिला जोधपुर ने कक्षा 12 में 81.20 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

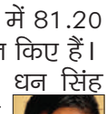
दुर्जन सिंह पुत्र श्री धन सिंह निवासी भाकरी जिला जोधपुर ने RBSE से कक्षा 10 में 85.67%अंक हासिल किए।

स्वरुप सिंह पुत्र श्री ओम सिंह निवासी भेड़ जिला जोधपुर ने आरबीएसई से कक्षा 10 मे 89.5% अंक हासिल किए हैं।

जितेन्द्र सिंह पुत्र चेनसिंह निवासी चांदेसरा जिला बाड़मेर ने सीबीएसई से कक्षा 12 (कला वर्ग) में 92.60 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। छात्र ने संघ के 8 शिविर किए हैं।

शारदा कंवर पुत्री मूल सिंह निवासी चांदेसरा जिला बाड़मेर ने सीबीएसई से कक्षा 12 (विज्ञान वर्ग) में 80.80 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। छात्रा ने संघ के 10 शिविर किए हैं ।

नरपत सिंह पुत्र बाबूसिंह निवासी भोजराज पुरम जिला जैसलमेर ने आरबीएसई से कक्षा 12 में 80.40 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

सुचिता कंवर पुत्री बेगसिह निवासी दुंकर(चुरू) ने कक्षा 10 वीं में 81 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

मूलतः निराधनु हाल निवासी जयपुर **सोर्यमान सिंह** पुत्र जितेन्द्र सिंह ने सीबीएसई से कक्षा 10वीं में 90 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। छात्र वारिष्ठ स्वयंसेवक भवानी सिंह जी निराधनु का पौत्र है।

मूलतः मेघसर (चुरू) हाल बीकानेर निवासी **पद्मनाभ सिंह** पुत्र कुलदीप सिंह ने सीबीएसई से कक्षा 10वीं में 94.2 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

लक्षिता सिंह पुत्री श्री दिलीप सिंह निवासी खरोकड़ा (पाली) ने सीबीएसई से कक्षा 10वीं में 95.2 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

स्वरूप सिंह पुत्र नरेन्द सिंह निवासी अवाय (जैसलमेर) ने RBSE से कक्षा 12वीं में 89.40 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। छात्र ने संघ के 4 शिविर किए हैं।

नंदू सिंह पुत्र भंवर सिंह निवासी छापड़ा (नागौर) ने आरबीएसई से कक्षा 10वीं में 89.67 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

अंकित सिंह पुत्र उदय सिंह निवासी छापड़ा (नागौर) ने RBSE से कक्षा 10वीं में 86.33 अंक हासिल किए हैं।

अंचल कंवर पुत्री भगवत सिंह निवासी छापड़ा (नागौर) ने आरबीएसई से कक्षा 10वीं में 87 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

अक्षिता कंवर पुत्री लाल सिंह निवासी छापड़ा (नागौर) ने आरबीएसई से कक्षा 10वीं में 83 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

नीतु कंवर पुत्री सुरेन्द्र सिंह निवासी धानणी (नागौर) ने आरबीएसई से कक्षा 10वीं में 97 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

दुर्गा कंवर पुत्री उदय सिंह निवासी छापड़ा (नागौर) ने आरबीएसई से कक्षा 10वीं में 97.17 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। छात्रा संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक श्री मदन सिंह जी की पौत्री है।

भंवर सिंह पुत्र ईश्वर सिंह निवासी छापड़ा (नागौर) ने आरबीएसई से कक्षा 10वीं में 97.33 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

ज्योति कंवर पुत्री भगवत सिंह निवासी छापड़ा (नागौर) ने आरबीएसई से कक्षा 12वीं में 90.40 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

सुचित्रा कंवर पुत्री भंवर सिंह निवासी छापड़ा (नागौर) ने आरबीएसई से कक्षा 12वीं में 83.80 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

ज्योति कंवर पुत्री सुरेन्द्र सिंह निवासी छापड़ा जिला नागौर ने RBSE से कक्षा 12वीं में 84.60 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हैं।

'कल वक्त बोलेगा'

बच्चों! दूसरों से लड़ने से पहले
अपने आप से लड़ना सीखो
खुद की नजरों में पहले
अच्छे दिखो
कि आईना नहीं है धूली धूसर
धूल चेहरे की झाड़नी होगी
अच्छी कुछ आदते गाड़नी होगी
रात सोने से पहले भी
और दिन उगने के बाद भी
पूछो अपने से कुछ कड़वे सवाल
वक्त जो सबसे कीमती
था आज का
कोड़ियों सा गवां दिया।
या जिन्दगी को अर्थवान
बनाने में
पसीने के साथ उबटन बना
चमका दिया चेहरा
चेहरा, जो इतिहास बन जाता है।
अपने बुजुर्गों के साथ
कितनी दूर तक गए
बच्चों के सपनों के पंखों को
उडान के लिए तैयार
किया क्या नभ?
वो छोटी गुड़िया के खिलोनों
का क्या किया?
पूरखों की जमीन जोतते जोतते
बुड्ढे हो जाने से कहीं
अधिक अच्छा है-
हथोड़े से पत्थर (फोड़ना)
हो सकता है आपका तोड़ा पत्थर
किसी मंदिर में भगवान बन जाए
और तुम्हें गौरव हो अपने होने का
जरूरी नहीं कि तुम
करोड़पति हो जाओ
और बना लो एक विशाल
महल पत्थरों का
और तुम भी पत्थर होने लगो
जरूरी है तुम एक
अच्छे पति बनो
अच्छे पिता और सबसे
अच्छे बेटे
लड़ो, मत अभी वक्त नहीं है
चूंकि अभी तुम्हें लड़नी है
एक विराट लड़ाई
वो लड़ाई जो कैद है इतिहास
के हर पृष्ठ पर
भविष्य की किताब में
उसे अंकित करना होगा
बच्चों एक दिन तुम्हें अपनी
संचित शक्ति से
वर्तमान के खिलाफ लड़ना होगा
अपने पुरखों की उदास आंखों में
टूटे सपनों को फिर से सजाने
जर्जरित गढों की ऊंची प्राचीरों पर
केशरिया फहराने
एक दिन मरना होगा।
एक दिन मरना होगा।

ईश्वर सिंह ढीमा

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

अलख नयन
आई हॉस्पिटल
Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

शाखामृत

कोरोना संकट के कारण उत्पन्न परिस्थिति के कारण वर्चुअल शाखा का प्रारंभ 13 मई को किया गया जो निरंतर जारी है। इसके माध्यम से वरिष्ठ स्वयंसेवक महावीर सिंह जी सरवड़ी तथा अजीतसिंह जी धोलेरा द्वारा पूज्य श्री तनसिंह जी की पुस्तक 'साधक की समस्याएं' तथा 'गीता और समाजसेवा' पर चर्चा की जा रही है। 12 जुलाई से 28 जुलाई तक की शाखा में मिला मार्गदर्शन का विवरण प्रस्तुत है। जो विगत अंक में स्थानाभाव के कारण प्रकाशित नहीं हो पाया। साथ ही 13 अगस्त से वर्चुअल शाखा में 'मेरी साधना' पर हुई चर्चा का भी संपादित अंश प्रकाशित किया जा रहा है।

वर्चुअल शाखा की अगली कड़ियों में 'साधक की समस्याएं' पुस्तक के अंतिम प्रकरण 'चयन का अभिनय' पर चर्चा करते हुए वरिष्ठ स्वयंसेवक माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी ने कहा कि हमारी साधना का लक्ष्य हमारे स्वयं के द्वारा ही चुना गया होता है, यद्यपि उसे चुनने का माध्यम कोई पुस्तक, व्यक्ति अथवा कोई परिस्थिति विशेष हो सकती है। संभव है कि उक्त माध्यम ने लक्ष्य की बहुत अधिक सुंदर व्याख्या की हो, पर हमने लक्ष्य के सभी पहलुओं को देखने के बाद ही उसका चयन किया था। लक्ष्य के चयन के बाद उसके अनुरूप मार्ग का भी हमने ही चयन किया। इसका अर्थ है कि श्री क्षत्रिय युवक संघ को हमने अपना लक्ष्य चुना है और उसकी प्रणाली को उस लक्ष्य प्राप्ति के मार्ग के रूप में स्वीकार किया है। इस चयन का अर्थ है कि संघ से कुछ भी छिपाकर न रखने का हमारा संकल्प है। ऐसा होने पर भी संघमार्ग पर चलते हुए हम विचलित क्यों हो जाते हैं? संघमार्ग पर आने वाली बाधा का हम सम्यक समाधान क्यों नहीं कर पाते? इसका उत्तर यही है कि लक्ष्य व मार्ग के रूप में संघ का चयन करते हुए भी हमने यह स्वीकार नहीं किया कि यह हमारा अपना चयन है अर्थात वह वास्तविक चयन न होकर चयन का अभिनय ही था। चयन के इस अभिनय को हम पाखण्ड भी कह सकते हैं और पाखण्ड कभी सत्य का स्थान नहीं ले सकता। जिस प्रकार मछली अपने भोज्य पदार्थ के आकर्षण के कारण ही कांटे में फंसती है उसी प्रकार हम भी अपने विश्वास के अनुसार ही लक्ष्य को चुनते हैं परंतु उसे अपना लक्ष्य मानते नहीं। अपने उत्तरदायित्व से बचने के लिए साधक यह भी कह सकता है कि लक्ष्य चयन के समय उसकी बुद्धि परिपक्व नहीं थी। यदि ऐसा हो तो भी जो पहले नहीं किया जा सका, वह अब करने में क्या अड़चन है। अर्थात अब जब हमारी स्वयं की दृष्टि में हमारी बुद्धि परिपक्व हो गई है तो अब हमें लक्ष्य के सभी पहलुओं पर भली-भांति विचार कर लेना चाहिए। हमारी बुद्धि अपने पूर्व चयनित लक्ष्य का खंडन करके क्या किसी नए लक्ष्य का चयन कर पाई है, इसे भी हमें जांच लेना चाहिए। अपनी संचित साधना को झुठलाकर भी नई साधना के विकल्प तक नहीं पहुंच पाने पर साधक साधनाभ्रष्ट होकर अपने विवेक, विचार और चिंतन को भी खो देता है। इस कारण वह अपने भ्रष्ट होने का अनुभव भी नहीं कर पाता है। संघ की साधना तलवार की धार पर चलने के समान कठिन है। जो इस धार पर चलते हैं, उन्हें शाश्वत सुख और संतोष की प्राप्ति होती है और जो इस धार से विचलित हो जाते हैं वे इस मार्ग से तो विमुख होते ही है परंतु संघर्ष क्षमता को खो देने के कारण जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी असफल ही सिद्ध होते हैं। इसीलिए साधना के प्रारंभ से पूर्व ही मार्ग में आने वाली कठिनाइयों पर मनन कर लेना चाहिए। एक बार इस मार्ग पर बढ़ने का साहस कर लिया है तो फिर पीछे हटने की मूर्खता साधक को नहीं करनी चाहिए। साधना से भ्रष्ट साधक गुणों को भी अवगुण के रूप में देखने लगता है। उसका संशय उसकी संचित साधना को भी नष्ट कर देता है और वह वहीं पहुंच जाता है जहां से उसने अपनी यात्रा प्रारंभ की थी। अपने लक्ष्य, अपने मार्ग, अपने धर्म और अपनी संस्कृति को अपना न मानना स्वयं के प्रति विश्वासघात करना है और साधनाभ्रष्ट साधक ऐसा ही करता है। जब भी हम हमारे विचार-दर्शन को तर्क और ज्ञान मीमांसा तक सीमित करने की भूल करते हैं तो हम लक्ष्य और धर्म को अलग मान लेते हैं परंतु वस्तुतः यह दोनों भिन्न न होकर एक ही है। हमारी साधना हमारी उपासना ही है। यह बलिदान की परंपरा है जिसमें हम अपना सर्वस्व बलिदान कर-के अपने लक्ष्य की कीमत चुकाते हैं। हमारे भीतर कीमत चुकाने की क्षमता कितनी है यही बात सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। जिस संस्था, समाज व राष्ट्र में श्रेयप्राप्ति के लिए कीमत चुकाने की क्षमता है उसे आगे बढ़ने से कोई नहीं रोक सकता। वेद के भगवान का कथन है कि विश्वात्मा के दृष्टिकोण से हमारे सहयोग की कहाँ आवश्यकता है, इसको पहचान कर उसे पूरा करने में जुट जाना ही जीवन की सार्थकता है। इसी प्रकार हमें भी संघ की साधना में अपने आपको खपा देना है, तभी हम अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे। पुस्तक का समापन करते हुए माननीय महावीर सिंह जी ने कहा कि इस पुस्तक को केवल पढ़ना ही पर्याप्त नहीं है अपितु इसे समझना और इसको जीवन में उतारना भी आवश्यक है। अतः पुस्तक को बार बार पढ़ें, समझने का प्रयास करें और जितना समझ में आये उसे जीवन में उतारने का अभ्यास करें।

वर्चुअल शाखा में 'गीता और समाजसेवा' पुस्तक के सोलहवें प्रकरण 'अनन्यभाव' पर चर्चा करते हुए वरिष्ठ स्वयंसेवक माननीय अजीतसिंह जी धोलेरा ने कहा कि पुस्तक के पिछले प्रकरण 'त्याग और समभाव' के अंत में पूज्य श्री तनसिंह जी ने बताया था कि - ₹महापुरुषों द्वारा परीक्षित त्याग के मार्ग को अनन्यभाव से स्वीकार करना ही हमारे लिए श्रेयस्कर है।₹ पूज्यश्री के उपरोक्त कथन में अनन्यता की बात बहुत महत्त्वपूर्ण है। अनन्यभाव शब्द का गीता में कई स्थानों पर प्रयोग हुआ है तथा इसके समानार्थी एकीभाव, एकभक्ति, अविकम्पयोग, अनन्ययोग आदि शब्दों का भी गीता ने प्रयोग किया है। अनन्यभाव का अर्थ है कि केवल एक में विश्वास, अन्य किसी में नहीं - ऐसा भाव। गीता ने अनन्यभाव वाले चित्त की तुलना वायुरहित स्थान में दीपक की लौ से की है जो कभी कम्पायमान नहीं होती। इस प्रकार के एकाग्र चित्त से भगवान का साक्षात्कार सम्भव है। चित्त की समस्त प्रवृत्तियों को समेट कर एक स्थान पर लक्षित करने से साधक महान लक्ष्य को भी सहजता से प्राप्त कर सकता है। जिस प्रकार आतशी शीशा सूर्य की सामान्य किरणों को एकाग्र करके अग्नि उत्पन्न कर देता है उसी प्रकार हम भी अपनी विश्रृंखलित शक्तियों को एकाग्र करके अद्भुत क्षमता प्राप्त कर सकते हैं। किसी संस्था में कार्य करते समय भी यह सिद्धांत महत्त्वपूर्ण है। एक ही व्यक्ति यदि अनेकों संस्थाओं में कार्य करता है तो उसकी शक्तियां बिखरी हुई रहेंगी, जबकि अनेकों व्यक्ति मिलकर एक ही संस्था में कार्य करें तो वह संस्था तेजी से विकसित होगी। समाज जागरण के कार्य में ध्येय के प्रति उत्कृष्ट अनन्यता एक चमत्कारिक शक्ति का कार्य करती है। श्री क्षत्रिय युवक संघ इसीलिए एक ध्येय, एक मार्ग, एक ध्वज और एक नेतृत्व की बात करता है। गीता में भी भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है कि जो ज्ञानी मुझे एकीभाव से भजता है वह मेरा अत्यंत प्रिय है। इस प्रकार अनन्यता को गीता ने और पूज्य श्री तनसिंह जी ने अत्यधिक महत्त्व दिया है। अनन्यभाव के बिना समाज जागरण का कार्य सफल नहीं हो सकता। जो बुद्धि स्थिर नहीं है अर्थात जो बार बार अपने निर्णय बदलती है उसे गीता ने व्यभिचारिणी बुद्धि कहा है। ऐसी बुद्धि वाले व्यक्ति को गीता ने अज्ञानी कहा है। भारतीय समाज विचार से पूर्व विचारक को महत्त्व देता है क्योंकि धर्म आचरण प्रधान होता है। अतः अनन्यता और एकनिष्ठता के बिना कोई भी विचारधारा सफल नहीं हो सकती। अनन्यता साधक को एक नया दृष्टिकोण प्रदान करती है और उसे ध्येय के साथ एकाकार कर देती है। चूंकि प्राम्भिक अवस्था में सीधे ही अव्यक्त व निराकार परमेश्वर में साधक की श्रद्धा होना कठिन है अतः किसी मूर्त प्रतीक की आवश्यकता होती है। श्री क्षत्रिय युवक संघ में केशरिया ध्वज वही प्रतीक है। शाखा की अगली कड़ियों में पुस्तक के अगले प्रकरण 'लोकसंग्रह' पर चर्चा करते हुए अजीतसिंह जी ने बताया कि लोकसंग्रह का अर्थ केवल भीड़ को इकट्ठा करना मात्र नहीं है अपितु इसमें धारण, पोषण व नियमन की प्रक्रिया भी सम्मिलित है। इसका अर्थ है कि लोकसंग्रहकर्ता अपने आचरण द्वारा जनसमुदाय को आकृष्ट करे, उन्हें अनुगमन के लिए प्रेरित करें तथा श्रेय-साधन की दृष्टि से उनका नियमन भी करें। लोकसंग्रह के कार्य के दो पहलू है, पहला - हम स्वयं कर्म करें तथा दूसरा - हम अन्यों को भी कर्म करने के लिए प्रेरित करें। गीता के अनुसार व्यक्तिगत लक्ष्यप्राप्ति के बाद भी लोकसंग्रह के दृष्टिकोण से साधना चलती रहनी चाहिए। श्रेष्ठ व्यक्ति के आचरण का सभी अनुकरण करते हैं अतः सिद्धि प्राप्त कर लेने पर भी गीता कर्म त्याग का समर्थन नहीं करती। श्रेष्ठ पुरुषों पर अपने आचरण द्वारा लोक-मर्यादाएं कायम करने का दायित्व होता है। सामान्य लोग महापुरुष के आचरण की स्थूलता में सूक्ष्म ज्ञान को नहीं देख पाते अतः समाज जागरण का कार्य करने वाले को अपने आचरण के संबंध में विशेष सावधानी रखना आवश्यक है। गीता ने इसी दृष्टिकोण से पूर्वजों द्वारा नियत कर्म को करने की परंपरा का पालन करने की बात कही है। गीता ने तो यहां तक कहा है कि ज्ञानी व्यक्ति को कर्म में आसक्त अज्ञानियों की बुद्धि में भेदभाव उत्पन्न नहीं करना चाहिए। अर्थात समाज कार्य की हमारी प्रणाली से कोई सहमत न हो और वह किसी अन्य प्रणाली से कार्य कर रहा हो तब भी हमें उसके कार्य का खंडन नहीं करना चाहिए अपितु निष्ठापूर्वक अपने कार्य में लगे रहना चाहिए। यही लोकसंग्रह का सही मार्ग है।

इसी प्रकार पुस्तक के अंतिम प्रकरण 'सफलता' पर चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि आज के समय में व्यक्ति कोई भी कार्य करने से पहले उस कार्य से होने वाले फायदे का विचार करता है। फायदे की इस भावना से समाज की विचारधारा को कुठित कर दिया है और इस कुंठा के कारण गीता के कर्म-योग के प्रति समाज का आकर्षण कम हो गया है। स्वार्थ के आधार पर व्यक्ति और समाज का निर्माण हो रहा है, फलस्वरूप कर्त्तव्य कर्म करने की प्रेरणा ही समाप्तप्रायः हो गई है। इस स्वार्थ ने त्याग के महत्त्व को गौण बना कर उसका स्वरूप और अर्थ भी बदल दिया है। आज यदि किसी कर्म का फल कर्त्ता के लिए नहीं है तो उसे त्याग कहा जाता है परंतु गीता त्याग की इस परिभाषा को स्वीकार नहीं करती। गीता के अनुसार जब स्वधर्मानुसार नियत कर्म को फलासक्ति रहित होकर कर्त्तव्य समझ कर किया जाता है तो वही सात्विक त्याग है। इसी प्रकार दान के बारे में भी गीता का कथन है कि उपयुक्त देश, काल व पात्र के प्राप्त होने पर प्रत्युपकार की चाह के बिना दिया जाने वाला दान ही सात्विक दान है। अतः फल की आसक्ति से रहित होना ही वास्तविक त्याग और दान है। आगे उन्होंने साधनामार्ग पर मिलने वाली सिद्धियों के सम्बन्ध में बताते हुए अष्टसिद्धियों तथा नवनिधियों का वर्णन किया तथा इन सिद्धियों की ओर इंगित करने वाले रामायण के कतिपय प्रसंगों को भी सामने रखा। इन सिद्धियों का वर्णन करते हुए अजीतसिंह जी ने कहा कि जो साधक इन सिद्धियों के उपभोग में लग जाता है वह योगभ्रष्ट होकर परमसिद्धि से वंचित हो जाता है। अतः साधक को अपने अंतिम लक्ष्य से पूर्व किसी भी प्राप्ति से संतोष करके रुकना नहीं चाहिए। गीता के अनुसार यह संसार प्रभु की फुलवारी है और हम इस फुलवारी के माली की भूमिका में हैं। इस फुलवारी के फूलों व फलों को हमें अपने लिए न रखकर इसके स्वामी अर्थात ईश्वर को अर्पण कर देना है। यही हमारी सत्ता के स्वामी की चाह है और स्वधर्म इस चाह को पूरा करने का मार्ग है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

शाखामृत...

समाज जागरण भी हमारा साध्य नहीं अपितु ईश्वर को प्रसन्न करने का साधन है। अतः हमें समाज जागरण का कार्य करते हुए भी उसमें आसक्त न होकर उसके फल को भगवद अर्पण कर देना चाहिए। कर्मफल के त्याग से कर्म दोषरहित हो जाते हैं तथा बंधन उत्पन्न नहीं करते। कर्मफल में आसक्ति न रखने की बात कहकर भी गीता का यह आश्वासन है कि किसी का भी श्रम कभी व्यर्थ नहीं जाता।

अर्थात हमने जो परिश्रम किया है उसका परिणाम अवश्य मिलेगा अर्थात हमारी सफलता निश्चित है परंतु सफलता के लिए नहीं कर्त्तव्य के लिए कर्म करना है। गीता कहती है कि ईश्वर के निमित्त क्या हुआ कार्य कभी कर्त्ता अथवा कर्मफल को नष्ट नहीं करता। भक्तिभाव से समर्पित पूजा की एक भी पंखुड़ी बेकार नहीं जाती। इसलिए हमें निश्चिन्त होकर फलासक्ति से रहित होकर समाज जागरण के कार्य में अपने को नियोजित कर देना चाहिए इसी में हमारा कल्याण है।

वर्चुअल शाखा के अगले चरण में 13 अगस्त से श्रद्धेय आयुवान सिंह जी हुडील की पुस्तक 'मेरी साधना' पर चर्चा प्रारंभ हुई। इस पुस्तक में 111 साधना परक अवतरण हैं जिनमें व्यक्ति में स्वयं के अस्तित्व के भान से समर्पण तक की यात्रा का सोपानबद्ध विवरण है। इनकी विवेचना करते हुए संघ के संचालन प्रमुख लक्ष्मण सिंह बेण्यांकाबास ने कहा कि साधक के हृदय में जब आत्म-प्रबोध का प्रथम जागरण होता है तो वह अल्हड़ उत्साह से समाज कार्य करना चाहता है परंतु अनुभव और परीक्षण के बिना परिणाम शून्य रहता है। फिर भी कुछ करने का भाव बना रहने पर साधक विभिन्न मार्गदर्शक व्यक्तियों, संस्थाओं आदि की ओर आकर्षित होता है किन्तु वहां जाकर वह देखता है कि बाहरी चकाचौंध के भीतर अंधकार छिपा हुआ है। ऐसी स्थिति में साधक की मानस वेदना उसे निष्क्रिय नहीं रहने देती और वह उस अंधकार में भी मार्ग ढूंढना चाहता है परंतु सफल नहीं हो पाता। सम्यक ज्ञान न होने से साधक असफल होकर कर्म-संन्यास की ओर उन्मुख होता है। उसके भीतर आत्मविसर्जन और कर्म-त्याग की भावना का उदय होता है परंतु उसके भीतर का सत्य उसे आगे बढ़ने को प्रेरित करता है। आगे बढ़ने पर उसे हृदय जगत में परमेश्वर की प्रेरणा से सनातन सत्य रूपी साध्य का ज्ञान होता है। इस ज्ञान को साधक जब बौद्धिक कसौटी पर कसता है तो व्यभिचारिणी बुद्धि उसे भ्रमित करके उसके संकल्प को अस्थिर बना देती है। बुद्धि के पीछे भागता हुआ साधक धर्म-शास्त्र, समाज विधान आदि को मिथ्या घोषित कर देता है और पूर्णता की अपेक्षा अपूर्णता की ओर खिंचने लगता है। साधक जब इसका कारण खोजता है तो उसे श्रद्धा और विश्वास के अभाव का भान होता है। तब वह अपने हृदय में प्रस्फुटित भागवत संदेश के अंकुर को श्रद्धा और विश्वास के जल से सींचना प्रारम्भ करता है। अपूर्ण तर्क की आपत्ति को महत्त्व न देने पर साधक को अपने कर्त्तव्य का ज्ञान होता है। यह कर्त्तव्य ज्ञान ही साधक का जीवन उद्देश्य है। साधक का कर्त्तव्य अर्थात उसका स्वधर्म जो ईश्वर ने उसके लिए निश्चित किया है। जिस प्रकार स्वमाता और विमाता में अंतर होता है उसी प्रकार स्वधर्म और परधर्म में भी अंतर होता है यह साधक को स्पष्ट हो उठता है। साधक की पहुंच से बाहर जो आदर्श हैं वे असंभव होने के कारण त्याज्य हैं, यह भी वह समझ जाता है। साधक को धर्म के व्यावहारिक स्वरूप की, उसके मूर्तिमान स्वरूप की आवश्यकता होती है जो उसे अपने समाज के रूप में दिखाई देता है। समष्टि के हित में ही व्यष्टि का भी हित समाहित है इस सत्य की अनुभूति साधक को होने पर उसे समाज-धर्म और स्वधर्म की एकरूपता का दर्शन होता है। क्षत्रिय कुल में जन्म लेने के कारण क्षात्रधर्म ही साधक का स्वधर्म है। शौर्य, तेज, धैर्य, दक्षता, युद्धप्रियता, दानशीलता, प्रजा के प्रति ईश्वरीय भाव जैसे गुणों के साकार रूप क्षात्रधर्म को स्वधर्म के रूप में पाकर साधक स्वयं को भाग्यशाली मानता है। क्षात्रधर्म के पालन से ही प्रकाश, जागृति और ज्ञान का अखंड साम्राज्य स्थापित हो सकता है यह समझ में आने के बाद साधक पराए हाथ की कठपुतली बनकर राजनीति का दास बने रहना स्वीकार नहीं करता। क्षत्रिय द्वारा अपना स्वभाव भूल जाने के कारण ही सभी ओर अधर्म और अनीति की अभिवृद्धि हो रही है अतः सभी भोगों से निर्लिप्त रहते हुए साधक क्षत्रिय धर्म के पालन का संकल्प करता है। साधक अपने संकल्प की पूर्ति हेतु दैवीय सहायता का भी आह्वान करता है। क्षत्रियोचित मृत्यु को लाखों जीवन से श्रेयस्कर समझने वाला साधक धर्म-युद्ध को दुर्लभ और अमूल्य अवसर मानता है। स्वाभिमान से जीने और गौरव से मरने की कामना करता हुआ साधक अपकीर्ति को नर्क से भी भयावह समझता है। अब साधक अमरता और क्षणभंगुरता के रहस्य को भी समझ लेता है और सत्य के साक्षात्कार की ओर बढ़ने लगता है। साधक को अपने लौकिक और पारलौकिक उद्देश्य की पूर्ति का एकमात्र माध्यम क्षात्रधर्म में मिलता है जो ज्ञान, कर्म और भक्ति का संगम है। स्वतंत्रता, स्वाभिमान और गौरव क्षात्रधर्म के अनिवार्य अंग है। संघर्ष की चिर परंपरा क्षात्रधर्म की शाश्वत आवश्यकता को प्रमाणित करती है। जो लोग ईश्वरीय विधान को नहीं समझते और जो नहीं जानते कि यह संसार द्वंद्वात्मक है केवल वही क्षात्रधर्म की आवश्यकता को नकारते हैं। पूर्वजों के उलाहने, ऋषियों का आदेश, राष्ट्र की पुकार, पीड़ितों का क्रन्दन, दुष्टों का अट्टहास और आत्मा की ध्वनि- सभी साधक को क्षात्रधर्म के पालन का संदेश देते हैं। ऐसा निश्चय करके जब साधक अपने समाज की स्थिति की ओर दृष्टिपात करता है तो वह पाता है कि वह अत्यंत जीर्ण-शीर्ण हालत में है। साधक समाज की पतित स्थिति देखकर लज्जित और पीड़ित हो उठता है और इस स्थिति को बदलने के उपायों पर चिंतन करने लगता है।

प्रतापसिंह पिलवई को श्रद्धांजलि

गुजरात में संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक प्रतापसिंह पिलवई का 21 अगस्त को देहावसान हो गया। मध्य गुजरात एवं महेसाणा प्रांत के संघ बंधुओं ने एक साथ 23 अगस्त को उनके परिवारजनों से मिलकर उनको श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर उनके व्यक्तित्व पर चर्चा करने के साथ-साथ प्रार्थना आदि के बाद उनका प्रिय सहगायन 'जिधर से भी गुजरता हूं...' भी गाया।

(पृष्ठ चार का शेष)

'नव नेताओं के नाम पाती'

आप से पहले वाले अनेक लोगों के लिए इस मां की उज्ज्वल परम्पराओं और गौरवशाली इतिहास का कोई विशेष महत्व नहीं रहा इसीलिए वे ऐसे लोगों के हाथों की कठपूतली बन खेलते रहे जिन्होंने इस कौम की श्रेष्ठताओं को नेष्ठताएं घोषित करने का भरपूर उद्यम किया और आज भी कर रहे हैं। आप जो नए नए आ रहे हैं राजनीति में उनको भी ऐसे विध्वंशक लोगों को बधाईयां देते हुए वह देखता है तो उसे दुःख तो होता ही है। जो लोग हमारी इस महान कौम की महानता से चिढ़ते हैं, उस महानता को कमतर सिद्ध करने का भरपूर प्रयास करते हैं, जब आपको उन लोगों की चापलूसी करते देखता है तो फिर उसकी आप से आशाएं धूमिल हुए बिना कैसे रह सकती हैं? आप सब उससे एक राजपूत के रूप में सहयोग की अपेक्षा करते हैं, उसे उसकी महत्वकांक्षा को एक तरफ रखकर आपका सहयोग करने के लिए तत्पर देखना चाहते हैं तो आप से भी अपेक्षा करता ही है कि आप भी आप से आगे चलने वाले उसी मां के किसी पुत्र के सहयोगी बनें, उस समय अपनी महत्वाकांक्षा से थोड़ा समझौता करें लेकिन आप जब ऐसा नहीं करते तो उसे निराशा ही होती है। तब वह सोचने को मजबूर होता है कि आपको आगे बढ़ाकर भी तो वह किसी ऐसे ही नेता को तैयार करेगा जो उत्तरप्रदेश की एसटीएफ को स्पेशल ठाकुरवादी फोर्स कहता है। इसलिए नेताजी आप उससे बंधु होने के कारण सहयोग की अपेक्षा करते है, इसे उसका दायित्व समझते हैं वैसे ही आप भी हमारी इस महान माता के प्रति अपने दायित्व को समझें और इसके प्रति थोड़ा गंभीर भी बनें। अन्यथा तो आप भी उसी भीड़ का हिस्सा बन जाएंगे जिस भीड़ में मौजूद अनेक नेताओं से वह पहले ही निराश है।

(पृष्ठ तीन का शेष)

जारी रही...

इसी प्रकार जिला सतर्कता समिति में लिखित में अपनी शिकायत भेजी जा सकती है। प्रत्येक बैठक में सूचीबद्ध मामलों पर आवश्यक कार्रवाई होती है। इन बैठकों में सरकारी अधिकारियों के अलावा सरकार द्वारा नियुक्त किए गए नागरिक भी शामिल होते हैं। 23 अगस्त को नागौर जिले के नवनिर्वाचित सरपंचों की बैठक रख आपस में परिचय करवाया गया एवं वरिष्ठ पूर्व सरपंचों द्वारा आवश्यक मार्गदर्शन किया गया। 23 अगस्त को ही बाड़मेर टीम द्वारा बाड़मेर के राजपूत पत्रकारों की बैठक रखी गई। 23 की शाम 4 बजे पाक्षिक समीक्षा बैठक रखी गई जिसमें विगत 15 दिन के काम की समीक्षा की गई एवं आगामी 15 दिन की कार्य योजना बनाई गई। इस बीच पाली टीम एवं जैसलमेर टीम की भी बैठक रखी गई।

प्रेमसिंह झिंझनियाली को पितृशोक

संघ के स्वयंसेवक प्रेमसिंह झिंझनियाली के पिता **हिन्दूसिंह** का 21 अगस्त को देहावसान हो गया। परमेश्वर दिवंगत आत्मा को शांति एवं परिवारजनों को संबल प्रदान करें।

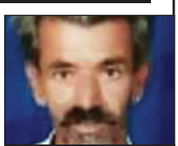

हिन्दूसिंह

प्रतापसिंह पिलवई का देहावसान

गुजरात में संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक **प्रतापसिंह पिलवई** का 21 अगस्त को देहावसान हो गया। 1989 में संघ के सम्पर्क में आने के बाद उन्होंने कुल 21 शिविर किए। परमेश्वर उनको अपने श्री चरणों में स्थान देवें एवं परिवार को संबल प्रदान करें।

प्रतापसिंह पिलवई

जयसिंह बिडोली का देहावसान

संघ के वयोवृद्ध स्वयंसेवक एवं सीकर जिले की राजनीति में अपना अहम स्थान रखने वाले **जयसिंह बिडोली** का 15 अगस्त को देहावसान हो गया। 1948 में संघ के सम्पर्क में आए जयसिंह ने संघ के 10 शिविर किए। परमेश्वर उन्हें अपने श्री चरणों में स्थान देवें।

जयसिंह बिडोली

बेलवा व देचु में स्नेहमिलन

@ देचू

@ बेलवा

श्री क्षत्रिय युवक संघ के शेरगढ प्रांत के बालेसर मंडल स्तरीय सहयोगियों का एक रात्रि कालीन स्नेह मिलन 15 अगस्त को केंद्रीय कार्यकारी प्रेम सिंह जी रणधा के सानिध्य में संपन्न हुआ। मां गाजना मंदिर बेलवा में सायं 6:00 बजे प्रार्थना व संध्या वंदन के पश्चात परिचय, हर बम खेल व सामाजिक बुराइयां एवं मेरी भूमिका चर्चा के उपरांत रात्रि भोजन हुआ। रात्रि कालीन सत्र में सहगायन, कहानी निर्माण खेल व मेरी साधना पुस्तक के अवतरणों की विवेचना की गई। दूसरे दिन निवृत्ति के पश्चात मंदिर परिसर की सफाई, आरती वंदन के बाद वर्चुअल, घरेलू व मैदानी शाखाओं पर बात हुई। नाश्ता करके काफिला बेलवा राणाजी की ओर वन भ्रमण के लिए निकला। रघुवीर सिंह के घर नींबू पानी पीकर विकिर किया। 18 जुलाई को कलाऊ शेरगढ़ में स्वयंसेवकों का स्नेह मिलन केंद्रीय कार्यकारी श्री प्रेम सिंह जी रणधा के सानिध्य में हुआ था, उसमें बार-बार ऐसे रात्रि कालीन स्नेह मिलन होने तय हुए थे, उसी कड़ी में आज का कार्यक्रम हुआ। साथ ही आगामी 22 अगस्त को देचू व 29 अगस्त को गोगादेव धाम सेखाला में भी ऐसे ही स्नेह मिलन प्रस्तावित हैं। इस अवसर पर गाजना माता पुजारी भीम सिंह, राणोसा प्रताप सिंह, किशन सिंह बेलवा, नरपत सिंह, गुलाब सिंह व नारायण सिंह बस्तवा, प्रेम सिंह परेऊ, सोहन सिंह नवलसर, भवानी सिंह खिरजां, दिलावर सिंह केतू, भगवान सिंह व देवी सिंह बेलवा, मोड़ सिंह भेड़, महेंद्र सिंह सेखाला, सवाई सिंह बालेसर सहित 50 के लगभग स्वयं सेवक उपस्थित रहे। 22 अगस्त को वरिष्ठ स्वयंसेवक हरिसिंह ढेलाणा के देचु स्थित आवास पर स्नेहमिलन रखा गया जिसमें केन्द्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा के सानिध्य में 40 स्वयंसेवक उपस्थित रहे। स्नेहमिलन में क्षेत्र में किए जाने वाले संघ कार्य को लेकर चर्चा की गई। मैदानी शाखाओं के साथ-साथ केन्द्रीय वर्चुअल शाखा को लेकर भी चर्चा की गई। स्नेहमिलन में क्रोध के विभिन्न पहलुओं को लेकर चर्चा की गई। स्वयंसेवकों ने बताया कि स्वयं के नियंत्रण में किया गया क्रोध सहायक होता है लेकिन यदि हम स्वयं क्रोध को नियंत्रण में आ जाएं तो हानिप्रद होता है। स्नेहमिलन में नई शिक्षा नीति को लेकर भी चर्चा की गई। अंत में केन्द्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा ने कहा कि कोरोना के कारण संघ की नियमित गतिविधियां नहीं हो रही हैं ऐसे में मेरे अंदर का संघ जीवित रहे इस हेतु अवसर ढूंढते रहें। अपनी कमजोरियों को पहचान कर हम उन पर क्रोध करें एवं उनका शमन कर निज को मजबूत बनाएं, यही क्रोध की सार्थकता है।

जैसलमेर की संभागीय बैठक संपन्न

जैसलमेर संभाग के स्वयंसेवकों की एक बैठक 16 अगस्त को संभागीय कार्यालय 'तनाश्रम' में रखी गई जिसमें संभाग प्रमुख व प्रांत प्रमुखों सहित अन्य स्वयंसेवक उपस्थित रहे। बैठक में कोरोना के कारण विगत महीनों में अवरुद्ध हुए संघ के भौतिक क्रियाकलापों को शनैः शनैः पुनः शुरू करने को लेकर चर्चा की गई। महामारी की गाइडलाइन के अनुरूप मैदानी शाखा लगने की संभावनाओं को तलाशा गया एवं ऐसे स्थानों को चिह्नित किया गया। इसके अलावा वर्चुअल माध्यम से किए जा सकने वाले कार्य की योजना बनाई गई। स्थानीय स्तर पर ऑनलाईन शाखा लगाने की बात की गई एवं केन्द्रीय वर्चुअल शाखा से नियमित जुड़ाव को लेकर भी चर्चा की गई। विभिन्न वर्चुअल माध्यमों से आपसी संवाद को जीवंत बनाए रखने के उपायों पर चर्चा की गई ताकि आपस में निरन्तर पोषण मिलता रहे एवं सक्रियता बनी रहे। संघशक्ति, पथप्रेरक के ग्राहक बनाने के लिए भी बात हुई एवं साथ ही विज्ञापन आदि की जिम्मेदारी ली गई। संयोमा व अन्य कार्यालय संबंधी सहयोग राशि को लेकर भी चर्चा की गई। सभी प्रांत प्रमुखों ने अपनी-अपनी कार्ययोजना भी बनाई।

शहीद राजेन्द्रसिंह भाटी को सेना मेडल

28 सितम्बर 2019 को जम्मू कश्मीर के राम बन क्षेत्र के बटूट में आतंकवादियों से लोहा लेते समय शहीद हुए राजेन्द्र सिंह भाटी को स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर मरणोपरांत सेना मैडल देने की घोषणा की गई। शहीद राजेन्द्रसिंह जैसलमेर जिले के मोहनगढ़ के निवासी थे एवं श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक थे।

डीडवाना में दुर्गादास जयंती का 22वां कार्यक्रम

आंग्ल पंचांग अनुसार महान क्षत्रिय दुर्गादास जी की जयंती 13 अगस्त को मनाई जाती है। इस बार भी अनेक स्थानों पर 13 अगस्त की उन महान प्रेरणा स्रोत का स्मरण किया गया। डीडवाना की श्री हिम्मत राजपूत छात्रावास कमेटी द्वारा विगत 22 वर्षों से प्रतिवर्ष जयंती मनाई जा रही है। इस बार भी कोरोना महामारी की गाइड लाइन का पालन करते हुए 13 अगस्त को कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए पूर्णसिंह बावड़ी द्वारा दुर्गादास जी के पदचिह्नों का अनुसरण करने का आह्वान किया। मुख्य अतिथि पूर्व सैनिक अधिकारी मैजर दीपसिंह एवं कमेटी के अध्यक्ष नंदसिंह रसीदपुरा ने दुर्गादास के जीवन चरित्र पर प्रकाश डालते हुए उपस्थित समाज बंधुओं से समाज कार्य में सहयोग का आह्वान किया। भाजपा नेता जितेन्द्रसिंह सांवराद ने विगत 22 वर्षों से इस अवसर पर आयोजित हो रहे कार्यक्रम की जानकारी देते हुए बताया कि द्वितीय कार्यक्रम माननीय संघ प्रमुख श्री के सानिध्य में रखा गया था। उन्होंने समाज के युवाओं द्वारा लॉकडाउन के दौरान किए गए कार्यों की जानकारी भी दी। कार्यक्रम में समाज में आर्थिक सहयोग करने वाले दीपसिंह सींवा व रुघनाथ सिंह दीनदारपुरा का सम्मान किया गया। जयसिंह सागू, विनोदसिंह बरांगना आदि के नेतृत्व में श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की स्थानीय टीम ने कार्यक्रम में पूर्ण सहयोग किया। संचालन सुरेन्द्रसिंह थेबड़ी ने किया।

आलोक आश्रम में मनाया स्वतंत्रता दिवस

15 अगस्त को देश का स्वाधीनता दिवस सर्वत्र मनाया गया। माननीय संघ प्रमुख श्री इन दिनों आलोक आश्रम बाड़मेर में निवासरत है। उन्होंने अपने साथियों सहित वहीं तिरंगा ध्वज फहरा कर स्वतंत्रता दिवस मनाया।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org